[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3468

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

हिंदी गीति – काव्य और संगीत का पारस्परिक संबंध और नवाचार

डॉ. प्रतिभा सोलंकी
प्राध्यापक, हिंदी
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नात. कन्या महाविद्यालय, किला भवन, इन्दौर

संगीत और साहित्य दोनों ही मनुष्य के भावों को व्यक्त करने के महत्वपूर्ण माध्यम है। दोनों के समन्वय से अलौकिक सौंदर्य सृष्टि–वृष्टि होती है जो मानव मन को सच्चिदानंद की अनुभूति और सत्यम्–शिवम्–सुंदरम् की प्रतीति कराती है। वाराहोपनिषद के अनुसार संगीत सम्यक गीत है, भागवत पुराण नृत्य तथा वाद्य यंत्रों के साथ प्रस्तुत गायन को संगीत कहता है तथा संगीत का लक्ष्य आनंद प्रदान करना मानता है। यही उद्देश्य साहित्य का भी होता है। साहित्य अक्षर ब्रह्म और शब्द ब्रह्म से साक्षात कराता है तो संगीत नादब्रह्म और तालब्रह्म से। साहित्य और संगीत दोनों का साथ चोली–दामन का सा है। विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के एक हाथ में वीणा है तो दूसरे में पुस्तक भी है। भर्तृहरिकृत नीति–शतकम् में कहा गया है –

साहित्य संगीत कला विहीनः साक्षात् पशु पुच्छं विषाणहीन :

अर्थात साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात पशु के समान है।

ये पंक्तियाँ साहित्य और संगीत के सह अस्तित्व को पूर्णरूपेण स्पष्ट करती है। स्वर के बिना शब्द और शब्द के बिना स्वर अपूर्ण है। दोनों का सम्मिलन ही उन्हें पूर्ण करता है। नाट्यशास्त्र के जनक भरतमुनि के अनुसार संगीत की सार्थकता गीत की प्रधानता में है। गीत, वाद्य और नृत्य में गीत ही अग्रगामी है, शेष अनुगामी। गीत शब्द प्रधान संगीत और संगीत नादप्रधान गीत है। गीत को शब्द रूप में संगीत और संगीत को स्वर रूप में गीत कहा जा सकता है।

काव्य और संगीत में पारस्परिक सामंजस्य होने के कारण अनेक पाश्चात्य विद्वान कविता की परिभाषा उपस्थित करते समय उसकी संगीतात्मकता का उल्लेख करना अनिवार्य समझते हैं। **एडगर एलन पो** का कथन है कि संगीत जब आनंददायक विचारों से युक्त होता है तो उसे कविता कहते हैं।[2] **कारलाइल** विद्वानों में भरत ने 'नाट्यशास्त्र' में दृश्य काव्य के संबंध में कहा है।[3]

मृदु ललित पदार्थ गूढ़ शब्दार्थ हीनं
बुधजनसुख योग्यं बुद्धिमन्नृत्त योग्यम्।
बहुर सकृत मार्ग संधि सधानं युक्तं
भक्ति जगति योग्यं नाटकं प्रेक्षकाणाम्।।[4]

अर्थात् मृदु ललित शब्दार्थ से युक्त, गूढ़ शब्दार्थ से हीन, बुद्धिमानों को सुख देने वाला, बुद्धिमान व्यक्तियों द्वारा किए हुए नृत्य से युक्त, श्रृंगारादि अनेक रसों की शैली से युक्त, संधियों के संधान से संपृक्त नाटक जगत में दर्शकों के योग्य होता है। आचार्य भामह, आचार्य कुंतक आदि ने भी अपने सिद्धांतों में परोक्ष रूप से संगीत के महत्व को स्वीकारा है। आचार्य विश्वनाथ का 'वाक्यं रसात्मक काव्यं' कथन सरस भावों की अभिव्यक्ति पर बल देता है। संगीत के अंतर्गत गायन, वादन और नृत्य तीनों का ही समावेश होता है। ध्वनि और लय का उपयोग कविता और संगीत में समान रूप से होता है। संगीत जिन भावनाओं की सूक्ष्म और निराकार अभिव्यक्ति करता है उन्हीं को कविता साकार रूप प्रदान करती है।

काव्य के विभिन्न स्वरूपों में से एक विशिष्ट स्वरूप गीति काव्य भी है। वैयक्तिक सुख–दुख की अनुभूति के क्षणों की तीव्र आवेग कांति से युक्त ऐसा काव्य जो भावों के तारतम्य, भाषा के सारल्य, कल्पना के सौकुमार्य एवं संगीत के माधुर्य से ओतप्रोत हो, गीतिकाव्य कहलाता है। इसमें पद्य रचना का संगीतमय होना आवश्यक है। बाबू गुलाबराय ने गीतिकाव्य के तत्वों में संगीतात्मकता कोमलकांत पदावली, निजी रागात्मकता, संक्षिप्तता और भावों की एकता को महत्वपूर्ण माना है।[5] गीतिकाव्य परंपरा वेदों से लेकर अब तक निरंतर चली आ रही है।

हिंदी गीतिकाव्य का उत्स अपभ्रंश साहित्य का गीतिकाव्य है। जैन साहित्य, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य आदि की रचनाएं पूर्व पीठिका के रूप में देख सकते हैं। आदिकाल में अमीर खुसरो और विद्यापति के काव्य में संगीत और काव्य का सुंदर समन्वय

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

हुआ। विद्यापति के मनोरम पदों में हमें शुद्ध रागात्मक आवेश की संगीतात्मक अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। हिंदी में गीतिकाव्य की अभिनव परंपरा का सूत्रपात उनके पदों द्वारा ही माना जाता है।

पूर्व मध्य काल में कबीर, सूर, तुलसी, जायसी, मीरा, रैदास, रसखान आदि की कविताओं ने गीतिकाव्य परंपरा को समृद्ध बनाया। इस दृष्टि से सूर का स्थान सर्वोपरि है। उनके पदों में भावुकता का व्यापक प्रसार और रागात्मक अनुभूति की तीव्रता मिलती है। सूर के पदों का संगीत विधान भी बहुत आकर्षक है। उनके बहुसंख्यक पद ऐसे हैं जहाँ रस और पद भाव के अनुकूल राग शीर्षक के चयन में सूर ने अपने संगीत ज्ञान का स्पष्ट परिचय दिया है। कहीं–कहीं उन्होंने अवसरानुकूल पदो के लिए समयानुकूल रागों का चयन कर भाव गरिमा में वृद्धि की है।

हिंदी गीति काव्य परंपरा में मीरा का विशिष्ट स्थान है। मीरा की अपार तन्मयता, नारी ह्रदय विरह कातरता, स्वानुभूति निरूपक प्रेमोद्‌गारों की तरलता और रागानुगाभक्ति की चरमोत्कर्षता अन्यत्र दुर्लभ है। मीरा को संगीत का भी अच्छा ज्ञान था। रीतिकाल में गीतिकाव्य परंपरा थोड़ी शिथिल हो गई। इस काल में घनानंद के साथ ही चरनदास, सहजोबाई, दयाबाई, दूलनदास, पलटू साहब वृंद जैसे संत कवियों का आविर्भाव हुआ जिनके पद गीतिकाव्य के रूप में प्रचलित हैं।

आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतेंदु हरिशचंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, बालकृष्ण शर्मा, नवीन, हरिवंशराय बच्चन आदि की कविताओं में गीतात्मकता मिलती है। छायावादोत्तर काल में गोपालदास सक्सेना 'नीरज' सोम ठाकुर, भारतभूषण, कुंवर बैचेन आदि के गीतों और मुक्तिकाओं में प्रेम की सरस सांगीतिक प्रस्तुति प्राप्त होती है।

आज संगीत और साहित्य की पारस्परिक संगति बहुत आवश्यक है। इनको अलग–अलग मानकर चलने से एकांगी होने की संभावना है। हिंदी गीति काव्य परंपरा ने संगीत के विकास में अहम् भूमिका का निर्वाह किया है। समसामयिक संदर्भों में यह गीतिकाव्य बहुत प्रासंगिक है। यह शाश्वत एवं कालजयी साहित्य है जो आज के तनावयुक्त जीवन में काव्य और संगीत का समन्वय कर लोगों में नई चेतना एवं नई ऊर्जा प्रसार कर सकता है। आवश्यकता है इसमें नवीन प्रयोगों की जिससे युवा पीढ़ी भी इससे जुड़ सके, उसके भटकाव को सही दिशा मिल सके। गीत–संगीत के सौहार्द्रपूर्ण समन्वय से भारतीय संगीत और हिंदी साहित्य दोनों ही विकास–पथ पर अग्रसर होंगे। इससे समाज को नई दिशा मिलेगी एवं सकारात्मक चिंतन का पथ प्रशस्त होगा।

संदर्भ –

1 *नीतिशतक – भर्तृहरि–श्लोक – 12*
2 *An anthology of critical statements, page 69*
3 *An anthology of critical statements, page 61*
4 *नाट्यशास्त्रम – भरतमुनि, पृ. 214*
5 *काव्य के रूप – बाबू गुलाब राय पृ. 122*